भारतीय गैंडा

THE GREAT INDIAN ONE-HORNED RHINOCEROS

(*Rhinoceros unicornis*)

भगवान बिरसा जैविक उद्यान

चकला (ओरमाँझी), राँची

भारतीय गैंडा
THE GREAT INDIAN ONE-HORNED RHINOCEROS (*Rhinoceros unicornis* Linnaeus)

गैंडा विषम खुरोंवाला विशालकाय स्तनपायी जानवर है। विषम खुरवाले अन्य जानवर हैं- घोड़ा, गदहा, जेब्रा तथा टैपिरस। इन सभी को जन्तुशास्त्री "पेरिसोडैक्टाइला" प्राकृतिक समूह में वर्गीकृत करते हैं। इनमें से मध्य और दक्षिणी अमेरिका में भी पाए जाने वाले टैपिरस को छोड़कर अन्य सभी केवल पुरानी दुनिया अर्थात् एशिया, अफ्रीका और यूरोप के जानवर हैं। गैंडा का पृथ्वी पर उद्भव स्थल एवं काल की प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं है, परन्तु उत्खनन में प्राप्त जीवाश्मिक अवशेषों के आधार पर कहा जा सकता है कि इनका उद्भव कम से कम सात करोड़ वर्ष पूर्व यूरोप-एशिया में ही हुआ तथा ये पृथ्वी के इतिहास के टर्सियरी काल (एक से सात करोड़ वर्ष पूर्व) में विविध स्वरूपों में सर्वाधिक फले-फूले।

गैंडा की विभिन्न प्रजातियाँ बाहर से एक जैसी दिखती हैं परन्तु आन्तरिक संरचना में वे एक दूसरे से सर्वथा भिन्न एवं अनोखी हैं। युगान्तर में ज्यादा आहार की जरूरत वाले गैंडों का नए चारागाहों की तलाश में प्रवसन अपने प्रादुर्भाव स्थल से धीरे-धीरे विभिन्न जलवायु वाले प्राकृतवासों में हुआ। नए जलवायु के अनुकूल अपने को ढालने की प्रक्रिया में इनमें अलग-अलग और नए लक्षण विकसित होते गए तथा पूर्ववर्त्ती मूल आबादियों से भौगोलिक दूरी के चलते आपसी प्रजनन जारी नहीं रह पाने के कारण विभिन्न प्रजातियाँ शीघ्र ही विकसित हो गयीं। उदाहरणार्थ, दो सिंगवाले अफ्रीकी गैंडा की विद्यमान दोनों प्रजातियाँ करीब दस लाख वर्ष पूर्व ही पृथक् अस्तित्व में आ चुकी थीं।

एशिया में गैंडा की तीन प्रजातियाँ विद्यमान हैं। ये प्रजातियाँ हैं - एक सिंगवाला भारतीय गैंडा (*Rhinoceros unicornis*), छोटा एक सिंगवाला जावा गैंडा (*R. sondaicus*) तथा एशियाई दो सिंगवाला गैंडा (*Didermoceros sumatrensis*)। अन्तिम दो प्रजातियाँ भारत में विलुप्त हो चुकी हैं।

सभी विद्यमान गैंडों को एक ही वर्गीकरण परिवार में रखा गया है। ये विशालकाय और भारी-भरकम होते हैं तथा इनकी हड्डियाँ अत्यन्त मजबूत होती हैं। इनकी टाँगें गोल-मटोल होती हैं जिन पर तीन खुर होते हैं जो इनकी विशेष पहचान है। इनका चमड़ा अत्यन्त मोटा और कम बालों वाला होता है जिस पर गट्टा जैसा तह (folds) बने रहने के कारण यह कवच की तरह

लगता है। इनकी नाक की हड्डियाँ लम्बी होती है जिस पर तथाकथित सिंग अवलम्बित रहता है। वस्तुतः इनका सिंग कड़े रेशों अर्थात् बालों का अन्तरंगीकृत समूह है।

एक सिंगवाला भारतीय गैंडा एशिया का विशालतम गैंडा हैं जिसकी औसत ऊँचाई 1.70 मी0, स्कंध के पीछे की गोलाई 3.55 मी0 तथा वजन चार मीट्रिक टन तक होता है। इसका मोटा चमड़ा कंधे के पीछे तथा जाँघ के आगे तह के कारण बड़े-बड़े कवचों के रूप में बँटा दिखता है। कंधे के आगे भी तह होता है, परन्तु यह तह पीठ तक नहीं पहुँचता है जो इस प्रजाति को एक अन्य एशियाई एक सिंगवाले जावा गैंडा से अलग स्वरूप और पहचान देता है। पूर्व में यह पूरे गांगेय क्षेत्र में पाया जाता था, परन्तु अब यह देश के सीमित क्षेत्रों यथा असम, पश्चिम बंगाल और नेपाल से सटे उत्तर प्रदेश के सीमावर्त्ती वनों में ही प्राकृतिक रूप से पाया जाता है।

गैंडा जहाँ दलदल और घास हो वहाँ रहना पसन्द करता है, परन्तु यह नदी-नाले वाले बड़े वृक्षों के घने जंगलों और पहाड़ियों पर भी रहता है। ये पूर्णतः शाकभक्षी होते हैं तथा इनका भोजन मुख्य तौर पर घास है। पानी और कीचड़ में बैठकर और लोट-पोटकर ये अपने शरीर का तापमान नियंत्रित करते हैं। भले ही एक ही वन क्षेत्र में एक से अधिक गैंडा रहे, वे अकेले ही विचरण करते हैं और केवल प्रजनन-काल में जोड़ा बनाते हैं।

नर गैंडा करीब सात साल की उम्र में और मादा करीब चार साल की उम्र में प्रजनन योग्य होते हैं। प्रजनन के लिए कोई निर्धारित काल नहीं होता है और आमतौर पर काफी भाग-दौड़ तथा नर द्वारा मादा का पीछा करने के बाद समागम होता है। करीब 16 माह के गर्भकाल के बाद मादा लगभग एक मीटर लम्बा और 60 किलोग्राम वजन के एक शिशु को जन्म देती है। कैप्टीविटी में इनका जीवन-काल करीब 47 वर्ष तक पाया गया है।

आदतन गैंडा एक ही स्थान पर कई दिनों तक मल-मूत्र त्याग करता है जहाँ थोड़े ही दिनों में मल का ढेर लग जाता है। ऐसा कर वे अपना वास-क्षेत्र चिह्नित करते हैं, परन्तु इसी स्वभाव के कारण शिकारी मल-त्याग के स्थलों पर इनके आने का इन्तजार करते हैं और आसानी से इनका शिकार कर लेते हैं। मूलतः शिकार इनके सिंग के लिए होता है जिसके बारे यह अंधविश्वास है कि इसमें काम-शक्ति बढ़ाने की तथा अन्य औषधीय शक्ति है। प्राचीन काल में इसके चमड़ा से योद्धाओं के लिए ढाल बनाया जाता था।

भारत में विद्यमान गैंडा की इस एकमात्र प्रजाति का अस्तित्व भी दुनिया के अन्य गैंड़ों की तरह ही अवैध शिकार के कारण संकट में है। भारतीय वनजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के अन्तर्गत इस प्राकृतिक धरोहर को पूर्णरूप से संरक्षित प्रजाति का दर्जा प्राप्त है तथा इसका शिकार करने अथवा इसके किसी अवयव को रखने या व्यापार करने के अपराध के लिए कठोर दण्ड का प्रावधान है, परन्तु जन-चेतना तथा सक्रियता के अभाव में इसे वास्तविक पूर्ण संरक्षण अभी तक नहीं मिल पाया है और इनकी संख्या घटकर अब करीब 2100 रह गयी है।

सामान्य सूचना

स्थापना वर्ष	1994	
कुल क्षेत्रफल	104 हेक्टेयर (जन्तु अनुभाग : 83 हे0; वनस्पति अनुभाग : 21 हे0)	
भ्रमण काल	अप्रैल, 1 से अक्टूबर, 31	पूर्वाह्न 9.00 बजे से अपराह्न 4.30 बजे तक (निकास 5.30 अप. तक)
	नवम्बर, 1 से मार्च, 31	पूर्वाह्न 9.00 बजे से अपराह्न 4.00 बजे तक (निकास 5.00 अप. तक)
प्रवेश शुल्क	वयस्क	रुपये 2/- प्रति व्यक्ति
	बच्चा (5-12 वर्ष)	रुपये 1/- प्रति बच्चा
	बच्चा (5 वर्ष से कम)	निःशुल्क
	नौका विहार (अधिकतम 4 व्यक्ति; 15 मिनट तक) रुपये 20/	
फोटोग्राफी/फिल्मिंग	मूवी कैमरा	रुपये 1000/- प्रतिदिन
	विडियो कैमरा	रुपये 200/- प्रतिदिन
	स्टील कैमरा	रुपये 5/-
वाहन पार्किंग	साईकिल	रुपये 1/-
	स्कूटर/मोटर साईकिल	रुपये 2/-
	कार/जीप/अन्य हल्के वाहन	रुपये 3/-
	बस/ट्रक/अन्य भारी वाहन	रुपये 5/-

उद्यान के भीतर निजी वाहन का प्रवेश वर्जित है।
उद्यान प्रत्येक सोमवार को बंद रहता है।

भगवान बिरसा जैविक उद्यान

चकला (ओरमाँझी), राँची

दूरभाष (उद्यान कार्यालय) : 0651-2576531

पत्राचार हेतु पता :

पोस्ट बाक्स संख्या-41, डोरण्डा जी.पी.ओ., राँची 834 002

Design to Print by CapsMicrographics Ph.2481073